

Bharti Sharma

Tel no -

मेरा नाम भारती है। मेरी उम्र 25 साल है। मुझे 16 साल की उम्र से सायनस है (ऐसा मुझे लगता है)। मुझे सायनस के साथ-साथ खांसी, कब्ज, पित्त, दाँत, खाज-जखुजली, पेट में दर्द, खुशी, बालों का झड़ना, बार-बार बुखार आना, हाँवा और सिर दर्द २ जैसी बिमारियाँ भी हैं।

मुझे जब पता चला कि मुझे सायनस हो गया है, तब मैं बहुत से डॉ. से पूछा कि इसका इलाज क्या है? दिन रात की दीर्घ बरसात बंदी होती। किसी ने कि ऑपरेशन करवा लो, तो किसी ने कहा कि रोज गोलीयाँ खाओ। मुझे गोलीयाँ खाकर ठीक लगा। मैं रोज गोलीयाँ खाने लगा सिर्फ सायनस के लिए ही नहीं बल्कि, सारी बिमारियों के लिए (बालों के लिए, कब्ज, बुखार, दाँत, खांसी आदि)। कुछ सालों तक तो ठीक-ठाक चलता रहा। मगर बाद में उन गोलीयों का असर ना के बराबर होने लगा। कुछ तकलीफ बढ़ने लगी थी दिन-ब-दिन। फिर मैंने सोचा रोज-रोज की तकलीफ से अच्छा है मैं ऑपरेशन करवा लूँ (नाक का)। और मैं 18 साल की उम्र में ऑपरेशन करवा लिया। अऑपरेशन पर पद पद मेरा। बहुत खुश थी मैं ऑपरेशन करवा कर ये सोचने लगी थी कि मैं सब ठीक हो गई। मुझे यीबेब खुशी, क्योंकि मेरी हालत बे पहले से भी ज्यादा खराब हो गई थी। किसी फिर सुलह दि कु दी कि 10 इंजेक्शन का कोर्स करवा लो ठीक दही जाभागी, ऊँच कोसी ने कुछ कहा कीसी कुछ।

Next page continued

799. मेन पचासो डॉक्टर्स डॉक्टरों की दवाईयाँ ली
कुछ दाय बही आया मगर । उल्टा मेरा दिर
यद बहता जा रहा था । एकदम पागलों जैसी
हालत हो गई थी । मनु करता था मर जाऊँ।
बहत से कोसती थी मैं भगवान की छि से
क्यों बिमारी दे दो आपने मुझे ।
किस्मत साथ दे रही थी अच्छी थी, मुझे
एक दोस्त मिला । जिसने मुझे बताया कि बिमारी
मुझे भगवान ने नहीं, मैंने खुद दी है ।
उस सब बातों के बारे में बताया जी जिबू पर
मैंने कभी ध्यान नहीं दिया । फिर मैंने
सबसे पहले तंबाकू का सेवन (दंत मंजन)
दोडा, फिर कॉफी (4 कप दिन में) दी ।
बाहर का खाना न पिना सब खैर किया ।
योग करना शुरू किया, एलापेथी लेगा 80mg.
कम कर दिया, व्युब-मिडिल से बचना शुरू
किया, आयुर्वेद दवाईयाँ ली, फिर भी
कुछ खास ठोस नहीं हुआ, बिमारीयाँ बहुत
बढ़ चुकी थीं । फिर उसी ने मुझे दो एक दोन
दिन होम्योपेथी के बारे में बताया । मैं 8
महीने साताक्रुज (पार्सिम) में डा. मंगेश ठाठरी
से इलाज करवाया व वहाँ से इलाज करवा
कर मेरे साथे मे 2-5-1 फायदा लगा मुझे मगर
तनाव था फिर दस पहले से भी ज्यादा दौन
लगा मुझे । इसलिए मैंने इलाज करवाना बंद कर
दिया । फिर मैं

continued Next page

15 जनवरी 2009 को डॉ. मेहरा के यहाँ भाबि।
काफ़ी झुंझ लगा। यहाँ भाबे दी, चारों मेन
दूखा कि चारों तरफ कुछ बू कुछ लिखकर
चपकामा हुआ है। क्या खाना है, क्या पीना,
कब सोना है, कब उठना, किस व वक्त
खाना है। सब कुछ पढ़ कर झुंझ लगा।
हम उस डॉ. से इलाज करवाना चाहिए जो
हम ठीक करने के साथ-साथ हमें ठीक (हमेशा)
रहना भी सिखाए। बू की उससे जो रिफ
भाए सिर्फ ब ठीक करे। "मे बू वो है
बूते 100 100% ठीक लगा मुझे। भाए सोचा
मे कि बामुद इस बार कदम एकदम सही
जगह पड़े है मेरे।

वो सोचना मेरा एकदम सही था। मुझे
खुशी है इस बात की कि भाजु मे करम-
कराब 60% ठीक हो चुकी है। भाए इस
बात की भाए ज्यादा खुशी कि ये खुशी सच्ची
मयली है इस बार।

वैसे मिस्टर मेहरा एक अच्छे डॉ. है भाए एक
ब्याब भी। बहुत जरूरत है आपके जैसे डॉक्टरों
की इस बूके देश की। क्योंकि मेरे जैसे
जा जाने कितने लोग बीज मर रहे हैं। मे बच
गई मगर। कोई बात बताने वाला हो गयी है
कि क्या सही है क्या गलत। कोई कुछ जानता
हो नहीं। यहाँ तक डू भी नहीं जानते। आम
इंसान उसे जानगा फिर।

continued Next page

भाप लोगों की ये कथा कहानी सुनाने को
मजबूर बस इतना है कि अगर आप यह
तक आए हैं तो बिना बिना जीने का हंग
सही हंग शीश कुर जाए बिना कि किसी
बेहस के बिना डा को और अपना वक्त स
खराब करे। और बिना डा को खर खाए।
होम्योपैथी डा आपको और भी मिले
मसार सही खाना-पीना, उठना-बैठना, योगा
आपको कीड़े बाढ़ी सीखावे वाला। इनके पास
ज्ञान का लुहा है जितना कलस भर लुहा
आप खींच ले उतना ऊँ अटख को वो लुहा
इन्हीं लुहा-लुहा कल के भर है और हम
कलस भर-भर कल मिल रहा है तो
हूँ इनकी बात मानकर आप बु फायदे में
हा रहे। कहे का मतलब है अगर आप
अहमीयत समझेंगे इनकी और इन बातों पर
अमूल करेंगे तो आप का जानकी जंजीर में
हाल वाला दमारी मुसीबतों से बच जाओगे कि
होने के साथ-साथ त
एक गुलत उहमी लोगों की मैं दूर करना
चाहती हूँ। लोग जो कहते कि योगा या
व्यायाम करने की इस वक्त बड़ा मिला या
बहत वक्त जाता है इस सब में उबसे।
योगी और व्यायाम करने से वा आपका वक्त
बचेगा और आप काम भी पहले से बेहतर
तरीके से कर व पाएंगे।

30/11/2010